# गोरख पांडेय की कविता

*मरना आसान है, कठिन है जीना*
*कठिन है जीना, कि एक मौत है भूख*
*जो कल–कारखानों से ले कर हरे–भरे मैदानों तक*
*अजगर की तरह पसरी है*
*दूसरी मौत है गुलामी जिसे कायम रखने के लिये*
*पूरा–का–पूरा तोपखाना है और तोपची है*
*सब कुछ को अपने अछोर अंधेरे के गाढ़े पर्दे में छिपाए*
*जो व्यवस्था कहलाती है*
*और फ़िर वह मौत तो है ही जो कंगाल मुल्क में बार–बार*
*महामारी बन जाती है, मरना आसान है, जीना है कठिन*
*लेकिन इस अछोर अंधेरे के गाढ़े पर्दे को चीरते हुए*
*तुम आते हो पैरों में सदा चप्पलें डाले*
*ढीले और चुस्त पाजामे में*
*माथे पर बल और निगाहों में चुनौती लिये*
*तुम आते हो, रोती हुई दुलहिनों को चुप कराते हो*
*सन्नाटा तोड़ने के लिये*
*काठ की घंटियों से कहते हो–बजो*
*जहां जा कर आदमी आसानी से खो जाता है*
*उस शहर से अपने गांव की ओर लौटते हो*
*और उस कच्ची सड़क की तलाश में भटकते हुए*
*जो जड़ों की ओर जाती है, तुम मौत को पहचानते हो*
*भूख और गुलामी के अछोर अंधेरे में फैली हुई*
*आदमी की और देश की, यानी हर वेश की, मौत को पहचानते हो*
*अब तुम कुआनो नदी नदी के किनारे हो*
*जिसमें बाढ़ आ गई है और सब कुछ डूब रहा है*
*मगर बाढ़ और कीचड़ का इतिहास पार करते हुए*
*अब तुम उस ज़मीन पर आ गए हो,*
*जहां से जीवन के सोते फूटते हैं*
*जहां पत्थरों की छाती पर उग आती है अक्षत दूब*
*जहां से रोशनी की कोपलें निकलती है*
*तुम आते हो अपने लोगों के पास*
*फटे–हाल किसानों और मज़दूरों के पास*
*तुम अपने गांव लौट आते हो, नक्सलबाड़ी*
*जो तुम्हारी तरह हम सबका गांव है*
*लुटी हुई मगर जो लूट का विरोध करने में जुटी हुई*
*हम सब की बस्ती है*
*यहां तुम्हारे और सबके चेहरे एक हो गए हैं*
*और तुम अंधेरे पर हमला शुरू करते हो*
*दोस्तों को पुकारते, और सिर्फ़ शब्दों से दुश्मनों के छक्के छुड़ाते*
*आगे बढ़ते हो, भेड़ियों के खिलाफ़ जलाते हो मशाल*
*और मौत के खिलाफ़ अगली रणनीति तैयार करने में*
*शामिल होते हो, तुम हमारे बीच होते हो*
*अपने लोगों, अपनी लय अपने संकल्प*
*और अपनी तालके बीच होते हो*
*कि अचानक नहीं होते हो, हम सकते में आ जाते हैं*
*हमें छोड़ कर तुम, ज़मीन हवा जल और रोशनी में मिल गए हो*
*हमें सदमा है, कि अभी तो तुम्हें यहां होना था*
*हज़ार संभवनाओं के साथ, रोशनी और आज़ादी की*
*ख़ूबसूरत कविताओं और गीतों के साथ*
*मेहनती मगर सताए हुए लोगों की*
*उम्मीदों, सपनों और लड़ाइयों के साथ*
*तुम वहां से बहुत आगे निकल आए थे*
*जहां से चले थे, मगर तुम्हें अभी और आगे जाना था*
*अभी कल ही तो नागभूषण पटनायक से मिलना था*
*और मौत के ख़िलाफ़ उनकी लड़ाई में शामिल होना था*
*करने थे अभी सुख–दुख के हज़ार चरचे*
*घटनाओं को अपने विवेक के चरखे पर कातना था*
*बच्चों में बांटना था नए विचारों का पराग*
*पीड़ित लोगों में विद्रोह का राग बांटना था*
*लेकिन तुम नहीं हो, हमने अपना एक सेनापति खो दिया है*
*हमारी एक मशाल बुझ गई है, हमारे गीतों की एक प्यारी कड़ी टूट गई है*
*एक गहरे सदमें में तुम्हारी यादों से घिरे, हम यहां खड़े हैं*
*जहां दूर से आती हुई एक धीमी ललकार, सुनाई पड़ रही है*
*आगे बढ़ो दोस्तों, आख़िर इस तरह कैसे चल सकता है?*
*इतनी भूख है इतनी गुलामी है इतनी मौत है*
*जीवन को चारों ओर दबोचती इतनी मौत*
*आख़िर इस तरह कैसे चल सकता है?*
*दोस्तों, आगे बढ़ो, कि यह अछोर अंधेरा हट जाए*
*कि ज़िंदगी जीते, मौत डर कर सामने न आ पाए*
*और कभी आए भी तो तुम्हारा आदेश ले कर आए*
*गरज यह कि जीना आसान हो मरना कठिन हो जाए।*

# सड़क पर अखबार बेचने से लेकर राष्ट्रपति भवन तक

**ए.पी.जे** अब्दुल कलाम जिन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी देश को एक करने में लगा दी, जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वह अनोखा रत्न हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति, मिसाइल मैन जो हमेशा भारत को एक विकसित देश के रूप में देखना चाहते थे, वह 26 जुलाई 2015 को हमारे बीच नहीं रहे। परन्तु आज भी उनके विचार, विज्ञान की खोज, सादगी, साकारात्मकता हमारे दिलों में जिंदा है, और आगे भी रखना है। जिन्होंने हमें भविष्य में आगे बढने की प्रेरणा दी है। उनके महान विचारों से चमकता चेहरा कभी भुलाया नहीं जा सकता।

ए.पी.जे अब्दुल कलाम भारत को हमेशा के लिये विकसित देश देखना चाहते थे। वह एक ऐसे राष्ट्रपति थे जिनकी आज तक किसी ने आलोचना नहीं की। उन्होंने राष्ट्रपति रहते हुए कभी वेतन नहीं लिया और सारा वेतन शैक्षणिक संस्थाओं को दिया। उन्होंने अपने एक साक्षात्कार में कहा था कि वह एक राष्ट्रपति की जगह एक शिक्षक कहलाना अधिक पसंद करेंगे। क्योंकि वह पूरे भारत को शिक्षित देखना चाहते थे। और उनकी मृत्यु भी तब हुई जब वह मेघालय के शिलांग में लैक्चर दे रहे थे। आज तो जितने भी पूंजीपति या नेता से लेकर मंत्रियों तक की यही सोच है कि वह किस तरह जनता को लूट कर खूद को आपने खाते में कर ले। जो मुख्यमंत्री है वो सोच रहे है कि वक्त मिलते ही प्रधानमंत्री की कुर्सी कब मिल जाय और जनता के खून चुसकर खुद अपनी जेब भर लें।

जब वह एक बार स्वीटजरलैंड गये थे तो वहां के लोग़ों ने उस दिन को विज्ञान दिवस के रूप में मनाया।

कलाम जी एक गरीब परिवार से थे। उनके पिता मछुआरे थे और बचपन में वह अखबार बेचकर पढा करते थे। बचपन में एक बार वह अपने पिता के साथ घूमने गए तो वहां उन्होंने एक खिलौना देखा, वह जानते थे कि उनके पिता वह नहीं खरीद सकते। उन्होंने बहुत देर तक उस खिलौने को देखते रहा और घर आकर उससे कहीं बेहतर खिलौना खूद बना दिया जो उड़ता भी था। उनका बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था और वे कहा करते थे की संघर्ष के बाद मिली सफलता का फल बहुत मीठा होता है।

उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक योगदान दिए न्युक्लियर बम और भी कई बमों का आविष्कार किया इसलिये उन्हें मिसाइल मैन के नाम से जाना जाता है। कलाम जी का कहना था कि जिंदगी में अगर कभी असफलता मिले तो इसका अर्थ है सफलता हमारा राह देख रही है। उन्होंने हमें हमेशा आगे की ओर बढने की प्रेरणा दी है। अब हम सबको उनके सपनों को साकार करना चाहिये। उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करने का सही अर्थ फुल मालाएं चढाने से कहीं अधिक उनके स्वप्न को पूरा करने में है जो उन्होंने हमारे भारत देश के लिये देखा था।

हालांकि उनका सपना इन सब भ्रष्टाचारी नेताओं के नेतृत्व में पूरा करना कठिन है। परन्तु असंभव नहीं है क्योंकि उनका ही कहना था कि कोई कार्य मनुष्य के लिये असंभव नहीं है। वे देश के बच्चों में देश के भविष्य देखते हुए ऐसा उपदेश दिये थे। देश के युवा और बच्चे हम सभी मिलकर उनके इस सपनों को साकार कर सकते हैं और सही मायने में श्रद्धांजली अर्पित कर सकते हैं। अमेरिका जैसे महाशक्ति का झंडा कलामजी के शोक में 26 2015 से आधा झुका रहा। यह पहली बार वहां ऐसा हुआ यह हमारे देश के लिये गर्व की बात है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 15 अक्टुबर के इनके जन्मदिन को विश्व छात्र जन्मदिवस के रूप घोषित किया है।

**-दीपिका झा**
**क्लॉस-12 वीं**
**शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल**
**एनआईटी फ़रीदाबाद**

# मुनाफ़ाखोरी के लिये एपीजे स्कूल उतरा गुंडागर्दी पर, बच्चा गया डिप्रेशन में

**फ़रीदाबाद ( म.मो. ) शिक्षा** व्यापार में जुटे शिक्षा के व्यापारी मुनाफ़ाखोरी के लिये किसी भी हद तक जा सकते हैं। इसका एक उदाहरण हाल ही में निखिल सैनी के रूप में सामने आया है। स्कूल द्वारा लिये गये टैस्ट को पास करने पर 16 अप्रैल 2015 को उसे ग्यारहवीं (नॉनमेडिकल) जमात में दाखिला दिया गया। इसके लिये बतौर दाखिला स्कूल ने 6860 रुपये वसूले। बच्चा हर रोज़ स्कूल जाता रहा लेकिन वहां घूम फ़िर कर आ जाता था, क्योंकि अभी पढाई शुरू नहीं की गयी थी। 28 मई को जब सीबीएसई का दसवीं का परिणाम आ गया तो फ़िर से निखिल का एक और टैस्ट लिया गया। इसे पास करने पर उसे फ़िर से दाखिला दिया गया। इस बार फ़िस ली गयी 58130 रुपये बजरिया ड्राफ्ट।

सीबीएसई नियमों के अनुसार इनकी श्रेणी में अधिकतम 45 बच्चे ही बैठ सकते हैं, परन्तु कमाई के लालच में स्कूल ने 68 बच्चे भर लिये। निखिल ने इसका विरोध किया तो स्कूल प्रिंसिपल व क्लास टीचर ने उसे प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। घर वालों को परेशान करने के लिये प्रिंसिपल सामरा ने दिनांक 13 जुलाई को अचानक दोपहर एक बजे मिलने के लिये बुलाया। निखिल के पिता ने मात्र एक घंटे के नोटिस पर आने में असमर्थता जताई तो प्रिंसिपल ने कह दिया कि तब तक बच्चे को स्कूल मत भेजो। अगले दिन जब प्रिंसिपल से मिले तो प्रिंसिपल की मांग थी कि वह पांच लाख रुपये बतौर डोनेशन जमा करायें क्योंकि उन्होंने इस बाबत एक आश्वासन बच्चे के दाखिले के समय दिया था। जबकि उन्होंने ऐसा कोई आश्वासन नहीं दिया था।

निखिल के पिता द्वारा उक्त रकम देने से साफ़ मना कर देने से नाराज़ स्कूल वालों ने बच्चे को तंग करना शुरू कर दिया। कक्षा में न बैठा कर लायब्रेरी में बैठाने लगे। उसके विरोध करने पर, तरह-तरह के बहाने गढ कर उसको एक दिन बुरी तरह से पीटा। सूचना मिलने पर निखिल के पिता उसे तुरंत सरकारी अस्पताल में ले गये। इलाज कराया तथा एमएलआर बनवा कर पुलिस को रिपोर्ट की गयी। पिटाई का कारण बेटे ने यह बताया कि स्कूल वाले उससे एक काग़ज पर दस्तखत कराना चाहते थे जिस पर उसके विरुद्ध एक छात्रा को छेड़ने का आरोप लगाया गया था। स्कूल के दबाव एवं रसूख के चलते पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की।

इन सब हालात से दुखी निखिल डिप्रेशन का शिकार हो गया। उसने आत्महत्या का प्रयास किया और गंभीर हालत में उसे एसियन अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बहुत कम लोग जानते हैं कि लॉर्ड स्वराजपाल के परिवार की इस फर्म का पूरा नाम अमिचन्द प्यारे लाल जैन यानी कि एपीजे कई पीढियों से तरह-तरह के व्यापार करती रही है। लेकिन पिछले करीब 50 वर्षों से शिक्षा व्यापार में उतर कर अंधा मुनाफ़ा कूट रही है।


## मज़दूर मोर्चा पहल
# आओ पत्रकार बनें

**तीन दशक पूरे करने को अग्रसर 'मज़दूर मोर्चा' को पत्रकारिता की दुनिया में एक निर्भीक, सजग व जनपरक अखबार के रूप में माना जाता है। एक ऐसा अखबार जिसकी आवाज को न खरीदा जा सकता है और ना डराया-दबाया जा सकता है। अपने पाठकों की आवाज बन चुके 'मज़दूर मोर्चा' के अनुभवी संपादकों/टिप्पणीकारों/संवाददाताओं द्वारा 'आओ पत्रकार बनें ' की पहल जल्द साकार होने जा रही है। इसके अन्तर्गत लोकतांत्रिक पत्रकारिता की दुनिया में उतरने के इच्छुक युवा, पत्रकारिता पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी और यहां तक कि पत्रकार के रूप में काम कर रहे नव-पेशेवर भी लाभ उठा सकते हैं। चार हफ़्ते तक उन्हें पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने के साथ-साथ ज़मीनी कवायदों से भी दो-चार कराया जायेगा।**

**पंजीकरण हेतु 'मज़दूर मोर्चा' कार्यालय से फ़ोन अथवा व्यक्तिगत रूप से 31 अगस्त तक सम्पर्क करें।**

**1डी/2 बी पी निकट हार्डवेयर चौक**
**एनआईटी फ़रीदाबाद**
**फ़ोन नम्बर-9999595632**



# घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

**आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:**

**अन्य बिक्री केन्द्र :**

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. पीपीएच बुक शॉप, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब